उत्पत्ति २२:
“इन बातों के पश्चात्...”

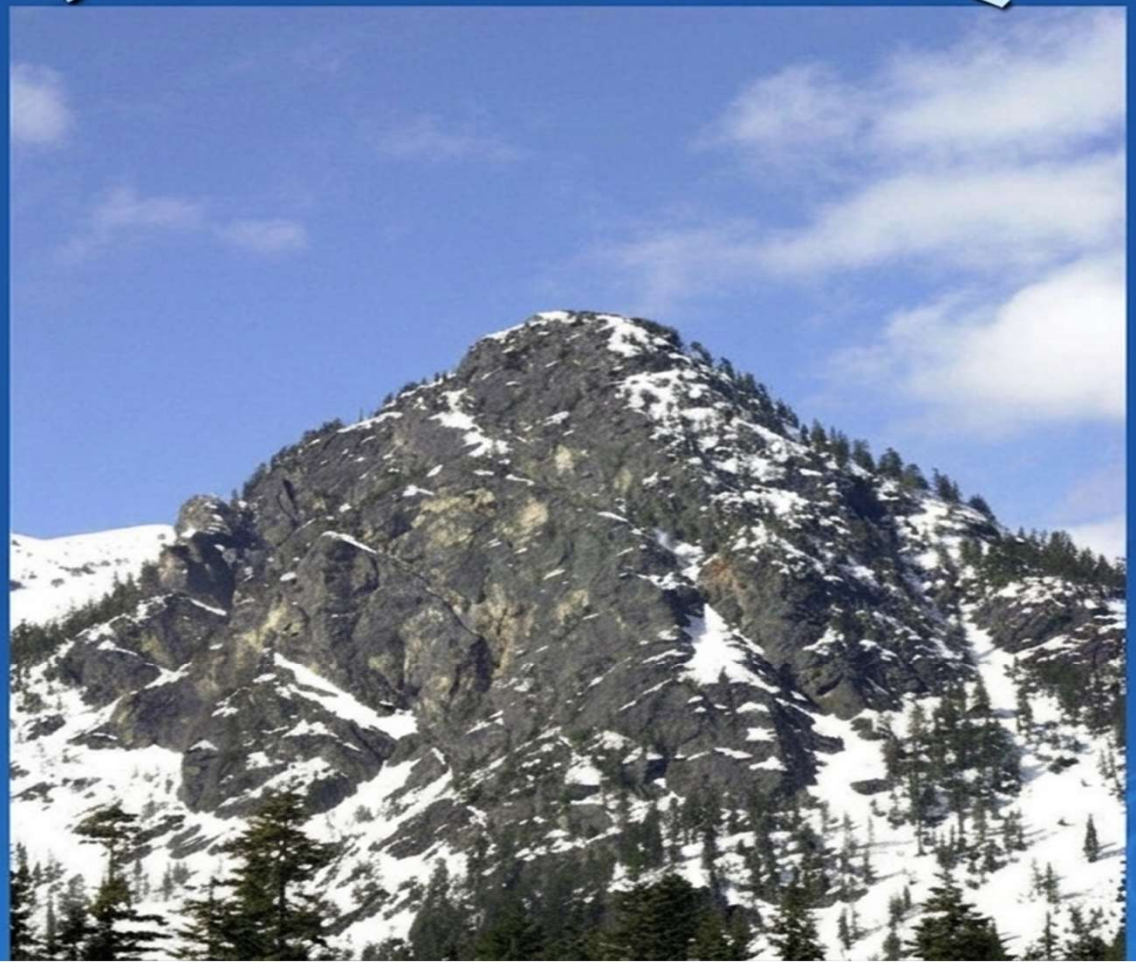

अब्राहम के जीवन और दैवीय उद्देश्य को समझाने वाले अनेक अध्याय

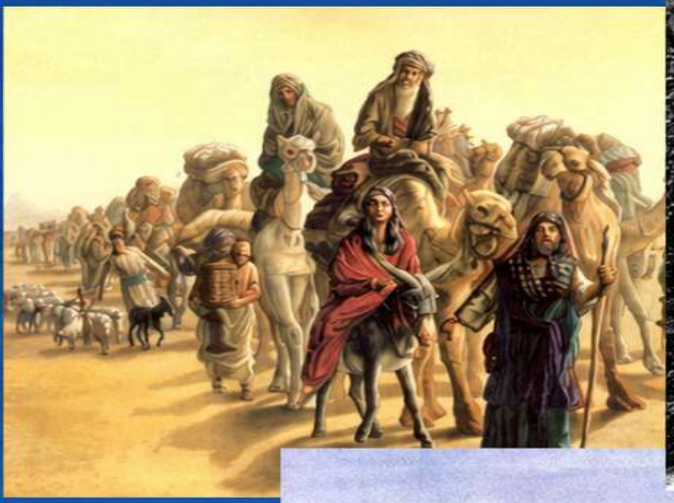

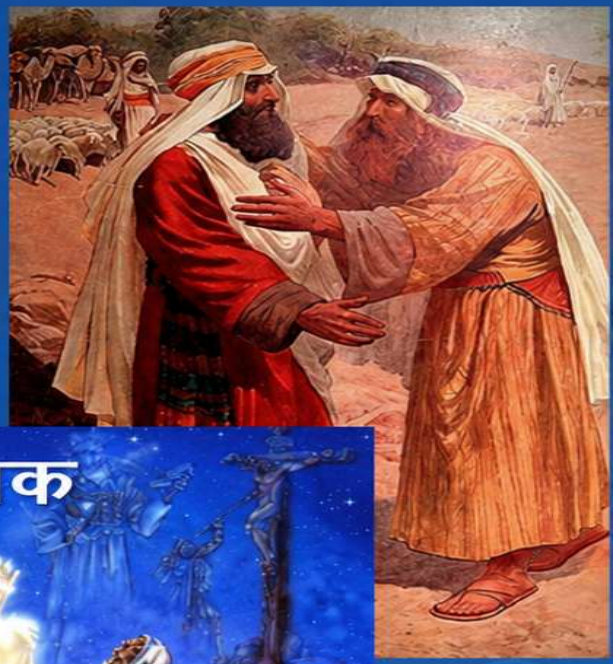

अकेदाह (बन्धन)

- इसका अर्थ है “बाँधना”।
- परमेश्वर ने अब्राहम को आज्ञा दी कि वह अपने अत्यन्त प्रिय पुत्र इश्माएल को छोड़ दे।
- “यहोवा के दूत” द्वारा उद्धार किया गया।
- अब इसहाक को अब्राहम से अलग किया जाना था।
- “यहोवा के दूत” द्वारा उद्धार किया गया।
- अब्राहम दोनों को अपना “ज्येष्ठ पुत्र” समझता था।

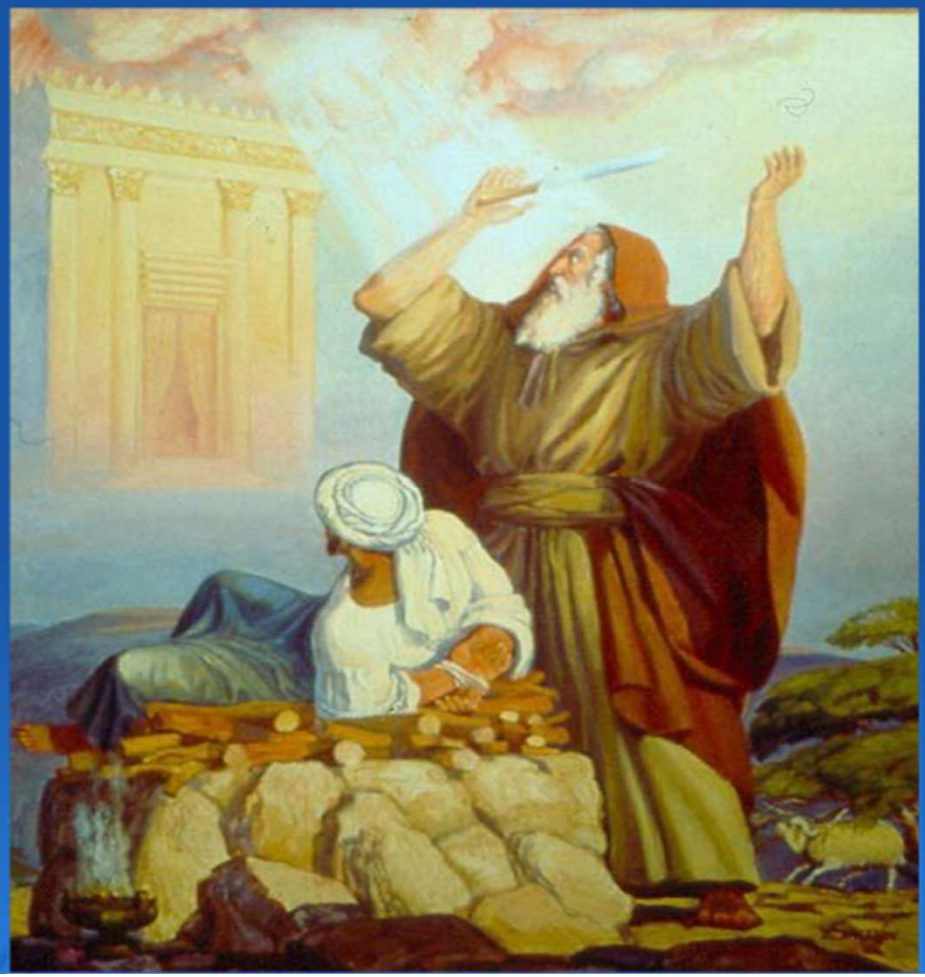

परमेश्वर अब्राहम की परीक्षा लेता है

- हमें यह बताया गया है, किन्तु अब्राहम को इसका ज्ञान नहीं था!
- हम प्रथम पद से ही जानते हैं कि इसहाक बच जाएगा।
- परमेश्वर की आज्ञा अब्राहम को रात्रि में स्वप्न के द्वारा मिली।
- उसे इसहाक को **'ओलाह'** के रूप में चढ़ाना था।
- बलिदान की पाँच प्रकार की होम-बलियाँ हैं, जिनके अलग-अलग नाम और उद्देश्य हैं।
- बलिदानों को मुख्यतः दो बातों से अलग किया जाता है: १) क्या चढ़ाया जा रहा है २) उद्देश्य और कार्य

माउंट मोरिया

पहले मन्दिर काल के अंत में यरूशलेम का भौगोलिक मानचित्र।

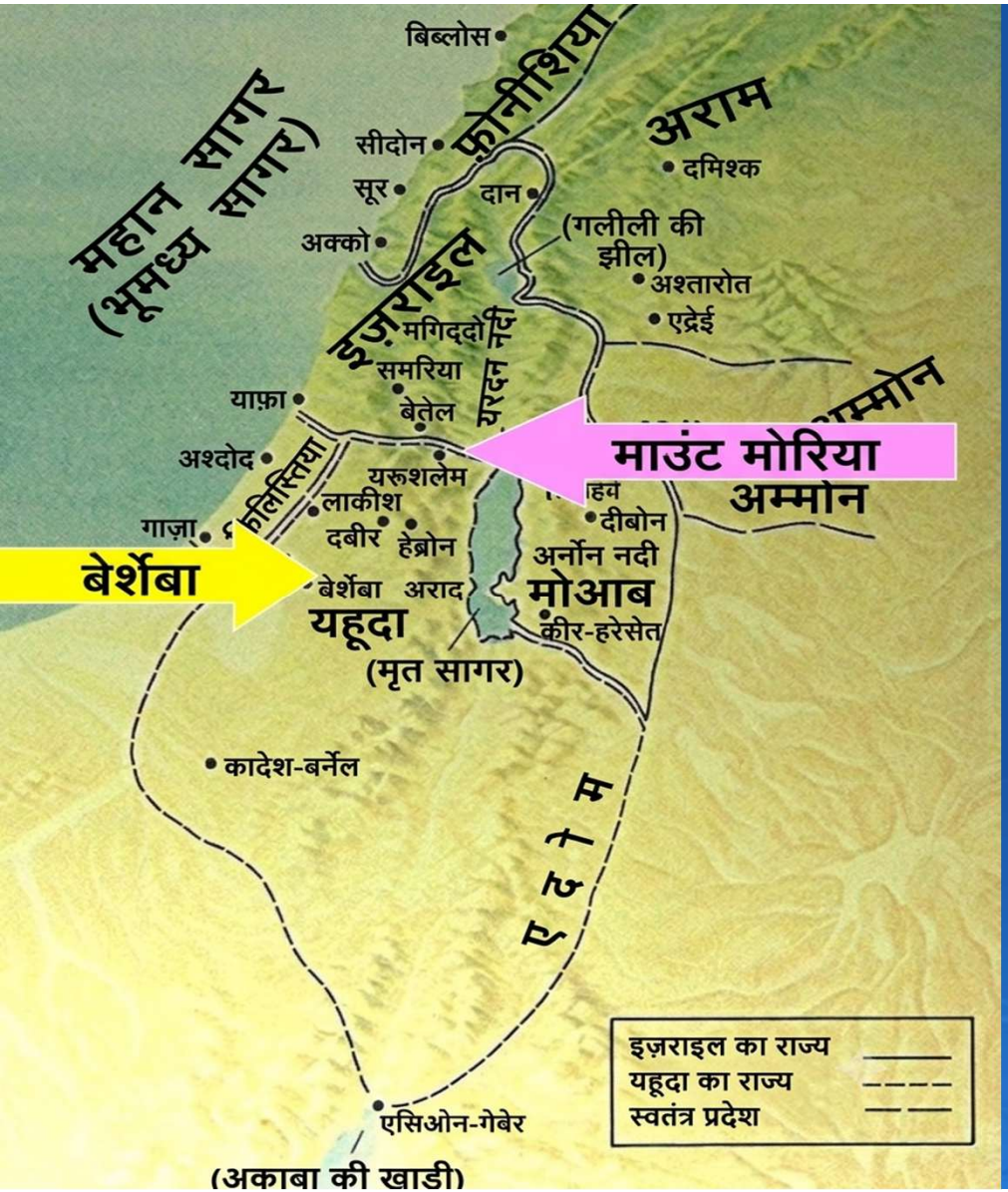

पचास मील की यात्रा

- अब्राहम अपने साथ दो सेवकों को ले गया।
- उसने वेदी की आग के लिए लकड़ी भी साथ ले ली।
- अब्राहम के लिए लकड़ी साथ ले जाने का कोई कारण नहीं था, क्योंकि यरूशलेम की पहाड़ियों में लकड़ी प्रचुर मात्रा में उपलब्ध थी।
- इसहाक का लकड़ी उठाकर चलना, यीशु का अपना क्रूस स्वयं उठाकर चलने का पूर्ण समानान्तर (समानता) है।

पिता और पुत्र बलिदान की वेदी पर साथ

- अब्राहम ने सेवकों से कहा कि हम लौट आएँगे। क्या यह झूठ था?
- यह मसीह द्वारा अपने चेलों से कहे गए वचन का पूर्वचित्र है, कि "अभी तुम उस स्थान पर नहीं आ सकते जहाँ मैं जा रहा हूँ।"
- पिता और पुत्र दोनों को बलिदान को साथ-साथ पूरा करना आवश्यक था।
- **पुत्र** = बलिदान स्वयं।
- **पिता** = बलिदान को आरम्भ करने वाला और ग्रहण करने वाला।

“पिता.....बलि का मेमना कहाँ है?”

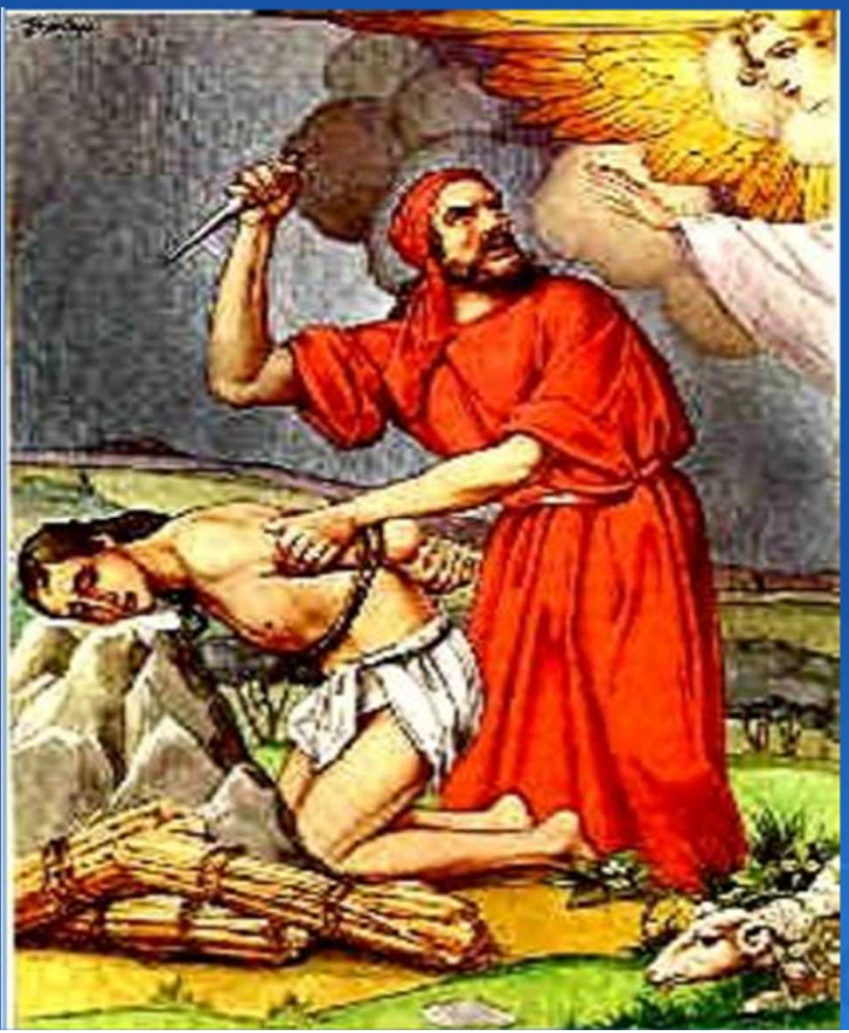

- इसहाक उस समय पच्चीस से सैंतीस वर्ष की आयु के बीच था।
- अब्राहम को यह बात अत्यन्त विचित्र नहीं लगी होगी, क्योंकि अन्यजातियों में मनुष्य-बलि प्रचलित थी।
- इसहाक ने कोई विरोध नहीं किया और न ही अपने अधिकारों की माँग की।
- यह मसीह का क्रूस पर चुपचाप जाने का पूर्ण समानान्तर है।
- इसहाक मसीह नहीं था।
- मसीह के आने का नियत समय अभी नहीं आया था।

इसहाक और मसीह: प्रकार और समानताएँ

- १) **पद २:** केवल पुत्र ही बलिदान है।
- २) **पद ३:** मृत्यु की आज्ञा मिलने के तीन दिन बाद भी दोनों जीवित थे।
- ३) **पद ६:** मृत्यु के लकड़ी के साधन को बलिदान स्थल तक स्वयं उठाकर ले गया।
- ४) **पद ८:** परमेश्वर ने बलि का मेमना प्रदान किया।
- ५) **पद १३:** एक मेढ़ा (नर) बलिदान का विषय बना।
- ६) **पद १४:** उस स्थान का नाम **यहोवा यिरेह** रखा गया, जिसका अर्थ है "यहोवा प्रदान करता है"।

यहोवा का दूत इसहाक का उद्धार करता है

- “प्रभु का दूत” बलिदान को रोक देता है, और फिर पहले दी गई वाचाओं को और भी दृढ़ एवं महान बनाता है।
- **मल’आख यहोवा** (यहोवा का दूत)।
- “मैंने अपनी ही शपथ खाई है।”
- नाहोर की वंशावली दी गई है।
- नाहोर के भी बारह पुत्र हुए, ठीक वैसे ही जैसे इश्माएल के बारह पुत्र और याकूब (इस्राएल) के बारह पुत्र हुए।

उत्पत्ति २३: साराह की मृत्यु

- साराह एक सौ सत्ताईस वर्ष की आयु में मृत्यु को प्राप्त हुई।
- परम्परा के अनुसार, मोरियाह पर्वत पर इसहाक के निकट-मृत्यु वाले घटनाक्रम का मानसिक तनाव ही इसका कारण था।
- जब उसकी प्रिय पत्नी का देहान्त हुआ, तब अब्राहम एक सौ अड़तीस वर्ष का था।
- यह इब्री व्यक्ति की प्रथम अंकित मृत्यु और दफन है।

मखपेला की गुफा हेब्रोन में

मखपेला की गुफा के अनुमानित स्थान पर स्थित दरगाह